International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

देशी ज्ञान के प्रचार-प्रसार के रूप में घाघ और भड्डरी की कृषि संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन

डॉ गोपाल कुमार

हिंदी अधिकारी, विश्वभारती, शांतिनिकेतन

शोध-सार

लोकोक्तियाँ किसी समाज की परंपराओं और सोच को दर्शाती है। वे अपने पूरे समुदाय का एक ज़रूरी हिस्सा हैं और कहानियों के रूप में उसके बारे में जानकारी देती हैं। घाघ की लोकोक्तियों में कन्नौज, चम्पारण और मुज़फ्फरपुर जिले की उत्तरीय सरहद पर बैरगनिया और कुड़वा चैनपुर की शब्दावली बहुतायत में है। घाघ की लोकोक्तियों का प्रचार-प्रसार अवध के कन्नौज के आस-पास बहुत है। अन्य जिले के किसान उसे अपनी ही बोली में ढाले हुए हैं। इससे घाघ की लोकोक्तियों की भाषा से उनके जन्म स्थान का पता नहीं लग पाता। भारत मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश है जिसमें ज़्यादातर छोटे किसान हैं जो खास पढ़े-लिखे नहीं हैं। विश्व की लगभग 30% आबादी कृषि कार्य से जुड़ी है। भारत मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश है। 58% भारतीय जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्य पर निर्भर है। इसके लिए देशी ज्ञान पद्धति के उपाख्यान की ज़रूरत है जो आम लोगों तक ज्ञान पहुँचाने में मदद करने के लिए और भी ज़रूरी हो जाता है ताकि औपचारिक शिक्षा की कमी को पूरा किया जा सके और किसानों को आसानी से याद रखने में मदद मिल सके। इस तरह, यह भारतीय ज्ञान पद्धति का एक हिस्सा है, जो कृषि के क्षेत्र में पारंपरिक ज्ञान के बारे में जानकारी देता है जो सदियों से चला आ रहा है। यह शोध-पत्र इन कहावतों पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है और कृषि के क्षेत्र में ज्ञान फैलाने के लिए एक किस्से-कहानियों के नज़रिए से उन्हें देखने की कोशिश करता है।

बीज शब्द: लोकोक्तियाँ, घाघ और भड्डरी, भारतीय ज्ञान पद्धति, कृषि, देशी ज्ञान

परिचय:

उत्तम चाकरी मध्यम बान ।

निखिद चाकरी भीख निदान।। (सिंह, 52)

- घाघ

घाघ का खहना है कि खेती सबसे अच्छा कार्य है। व्यापार मध्यम है, नौकरी निषिद्ध है और भीख माँगना सबसे बुरा कार्य है। अत: कृषि कार्य का महत्व सदा से रहा है।

लोकोक्ति लोक जीवन के अनुभव पर आधारित तार्किक, प्रभावशाली एवं प्रामाणिक उक्ति होती है। यह किसी समाज की परंपराओं एवं धारणाओं पर प्रकाश डालती है एवं समाज का आवश्यक अंग होती है। यह मौखिक रूप में पीढ़ी - दर - पीढ़ी चलती रहती है एवं आम जीवन में व्यवहृत होती है। लोकोक्तियों की भाषा प्राय: बोलचाल की भाषा होती है। यह प्राय: किसी स्थिति, व्यवहार एवं परिणाम को समझाने के लिए प्रयुक्त होती है। घाघ और भड्डरी की कृषि संबंधी लोकोक्तियाँ अनुभव पर आधारित हैं। उनमें मौसम, मिट्टी, फसल चक्र, सिंचाई, खाद-बीज के उपयोग संबंधी व्यावहारिक कृषि ज्ञान को सरल भाषा में व्यक्त किया गया है। उनकी लोकोक्तियाँ मौसम एवं खेती के मूलभूत सिद्धांत को समझने के लिए आज भी किसानों का मार्गदर्शन करती हैं।

विश्व की लगभग 30% आबादी कृषि कार्य से जुड़ी है। भारत मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश है। 58% भारतीय जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्य पर निर्भर है[1]। 20-30% भारतीय किसान साक्षर हैं[2]। उपलब्ध सरकारी सांख्यिकीय आँकड़ों के अनुसार 1951 ई0 में भारत की ग्रामीण क्षेत्र की साक्षरता 12.1% थी। अत: घाघ और भड्डरी के जीवन काल में यह नगण्य रही होगी। डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन की हाल के रिपोर्ट के अनुसार, भारत के 90% से अधिक निवासी डिजिटल रूप से निरक्षर हैं (नाम उल्लेखित नहीं, 2020)। इसका संभावित कारण अधिकांश आबादी का ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करना और सदियों से कृषि

कार्य में प्रशिक्षित और केंद्रित रहना हो सकता है। अधिकांश भारतीय किसान वर्तमान में भी पारंपरिक ज्ञान के आधार पर कृषि कार्य करते हैं।

घाघ और भड्डरी का अनुमानित जीवन काल (16वीं - 17वीं शताब्दी)

घाघ और भड्डरी के जन्म स्थान और जन्म समय के बारे में कोई प्रामाणिक दस्तावेज़ उपलब्ध नहीं है। कन्नौज में घाघ के वंशज मौजूद माने जाते हैं (किरण त्रिपाठी, 2013) । इनकी लोकोक्तियाँ कन्नौज एवं बैंसवारा क्षेत्र में अधिक प्रचलित हैं। भड्डरी के जन्म स्थान के बारे में कोई अनुमान नहीं है और न ही इसके वंशज के बारे में कोई सटीक जानकारी मिलती है। इनके लोकोक्तियों में मारवाड़ी शब्दों के प्रयोग बहुत मिलते हैं, तथा युक्तप्रांत और बिहार की टेठ बोली के शब्द भी मिलते हैं। घाघ और भड्डरी ने अपने लोकोक्तियों को स्थानीय भाषा में कहा जिससे वे आम जन में लोकप्रिय हुए। उनके अनुभव आधारित लोकोक्तियों से आम जन को लाभ मिला जिसके फलस्वरूप वे पीढ़ी दर पीढ़ी प्रयुक्त होते रहे है।

कृषि कार्य जीवन के लिए आवश्यक

भारत एक कृषि प्रधान देश है। वैदिक काल से ही इस देश में कृषि के प्रमाण मिलते हैं। मेसोपोटामिया एवं हड़प्पा की खुदाई में भी अन्न के प्रमाण मिले हैं। अत: कृषि से पैदा होने वाले अन्न हमेशा से महत्वपूर्ण रहे हैं। भोजन के अलावा भारत में सभी समुदायों के धार्मिक अनुष्ठानों में विविध प्रकार के अन्न का उपयोग किया जाता है। अन्न के महत्व को इस प्रकार दर्शाया गया है -

अन्नं प्राणो बलंचान्नमसर्वार्थसाधक्रम्।

देवासुरमनुष्याष्च सर्वे चान्नोपजीविन:॥

अर्थात् अन्न ही प्राण और बल है, और अन्न ही सब कामों को सिद्ध करने वाला है। देवता, असुर और मनुष्य, सभी अन्न से जीते हैं। वाचस्पति कोष में कृषि संबंधी पराशर के श्लोक मिलते हैं। उन्होंने श्लोक में विस्तारपूर्वक हल के अंग, जुवा, फार, दाबी, पाचर, हरीस आदि के आकार के बारे में वर्णन किया है। अत: कृषि का महत्व सदैव रहा है। अत: कृषि उत्पाद

जीवन के लिए आवश्यक है। इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना कठिन है। कृषि कार्य से जुड़े लोगों की संख्या एवं एवं इसकी आवश्यकता को देखते इस क्षेत्र में निरंतर आविष्कार किये जा रहे हैं, कृषि संबंधी नए उपकरण बनाए जा रहे हैं, बीज के उन्नत किस्म विकसित किए जा रहे हैं, अच्छे खाद एवं कीटनाशक तैयार किये जा रहे हैं। निष्कर्षत: पूरे विश्व में कृषि संबंधी उत्पादन को बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं। अत: पृथ्वी पर जीवन के लिए कृषि कार्य आवश्यक है।

मौसम का ज्ञान

भड्डरी या भड्डली की लोकोक्तियाँ मुख्यत: ज्योतिषशास्त्र पर आधारित है। उन्हें अच्छा मौसम विज्ञानी माना गया है। विगत कई दशकों के प्रयास के बावजूद कृषि योग्य भूमि का अधिकांश भाग वर्षा पर निर्भर है। वर्षा के अभाव में किसानों को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में भारतीय पंचांग पर आधारित भड्डरी का ज्ञान उल्लेखनीय है। वे कहते हैं -

मार्ग महीना माहिं जो, जेष्ठा तपै न मूर।
तो इमि बोलै भड्डली, निपटै सातो तूर॥ (किरण त्रिपाठी, 57)

अर्थात् अगहन महीने में यदि न ज्येष्ठा नक्षत्र तपे और न मूल, तो भड्डरी कहते हैं कि सातों प्रकार के अन्न पैदा हों। यहाँ सात प्रकार के अन्न से तात्पर्य धान (खरीफ), गेहूँ (रबी), मिलेट (ज्वार, बाजरा, रागी), दलहन, ईख, कपास तथा पेय (चाय एवं कॉफी) से है। इसी क्रम में आगे कहते हैं -

असुना गल भरनी गली, गलियो ज्येष्ठा मूर।
पुरवाषाढ़ा धूल, कित, उपजै सातो तूर ॥ (किरण त्रिपाठी, 63)

अर्थात् अश्विनी में वर्षा हुई, भरणी में हुई, ज्येष्ठा और मूल में हुई, तो पूर्वाषाढ़ में कितनी धूल शेष रहेगी? निश्चय ही सातों प्रकार के अन्न उपजेंगे। वहीं बरसात के बारे में कहते हैं-

मार्ग बदी आठें घटा, बिज्जु समेतो जोइ।
तौ सावन बरसै भलो, साखि सवाई होइ॥ (किरण त्रिपाठी, 57)

अर्थात् अगहन बदी अष्टमी को यदि बिजली समेत घटा हो, तो सावन में बरसात अच्छी होगी और उपज सवाई यानी अच्छी होगी। अकाल की भविष्यवाणी करते हुए चेतावनी देते हैं -

पाँच मंगरौ फागुनौ, पौष पाँच सनि होय।
काल पड़ौ तब भड्डरी, बीज बदौ मति कोइ।। (किरण त्रिपाठी, 61)

अर्थात् यदि फागुन के महीने में पाँच मंगल और पौष में पाँच शनिवार पड़े, तो भड्डरी कहते हैं कि अकाल जरूर पड़ेगा, कोई बीज मत बोओ। यह गणना उनके ज्योतिष ज्ञान की पुष्टि करता है।

कृषि विज्ञान में फसल के तीन प्रकार माने गए हैं - रबी, खरीफ और जैद। तीनों फसलों की उत्तम पैदावार के लिए भड्डरी कहते हैं -

रोहिनि जो बरसै नहीं, बरसै जेठा मूर ।
एक बूंद स्वाती पड़ै, लागै तीनों तूर ।। (किरण त्रिपाठी, 68)

अर्थात् यदि रोहिणी न बरसे, पर जेष्ठा और मूल बरस जाय और एक बूँद स्वाती की भी पड़ जाय, तो तीनों फसलें अच्छी होगी।

सिंचाई

कृषि कार्य में सिंचाई बहुत महत्वपूर्ण है। सिंचाई कार्य नल-कूप, कुआँ, नहर इत्यादि के माध्यम से होती रही है। आजकल वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रगति होने के कारण आवश्यकता पड़ने पर कृत्रिम वर्षा की भी व्यवस्था की जाती है। सिंचाई की समय-समय पर आवश्यकता का ध्यान रखते हुए वे खेत तक पानी पहुँचाने की व्यवस्था पर जोर देते हैं (किरण त्रिपाठी, 26)। वे कहते हैं-

खेत बेपनिया जोतो तब।
ऊपर कुआँ खोदाओ जब॥ (सिंह, 68)

अर्थात् जिस खेत में पानी न पहुँचता हो, उसे तब जोतो जब उसके ऊपर कुआँ खोदाओ। ध्यातव्य है कि पहले सिंचाई के साधन सीमित थे। कृषक वर्षा पर निर्भर रहते थे या नल-

कूप, कुआँ आदि के माध्यम से खेतों की सिंचाई करते थे। घाघ को भी मौसम की अच्छी पहचान थी। वे कहते हैं कि यदि शाम में इंद्रधनुष दिखाई दे और सुबह में मोर नाचे तो वर्षा बहुत होती है। ऐसी स्थिति में खेत जोतना चाहिए । वे इसे इस प्रकार व्यक्त करते हैं-

साँझे धनुक सकारे मोरा।
यह दोनों पानी के बौरा।। (किरण त्रिपाठी, 28)

कृषि संबंधी लोकोक्तियाँ

ईख की खेती के लिए घाघ अगहन महीने में खेत की जुताई की सलाह देते हैं। वे खेत में अच्छी पैदावार के लिए आषाढ़ एवं सावन मास के साथ-साथ क्वार में खेत जोतने की सलाह देते हैं। साथ ही यह भी कहते हैं कि खेत की गहराई से जोता जाना आवश्यक है। वे कार्तिक मास में हल जोतने को अत्यावश्यक बताते हुए रात में भी हल जोतने की सलाह देते हैं। घाघ बहुत ही सरल शब्दों में खेत की मिट्टी पकने पर ही खेत की जुताई करने का सुझाव देते हैं क्योंकि कच्ची मिट्टी में बीज अंकुरित नहीं होता। इस संदर्भ में उन्होंने कहा भी है -

कच्चा खेत न जोते कोई।
नाहीं बीज न अँकुड़ै कोई॥ (सिंह, 68)

घाघ आगे कहते हैं कि यदि आषाढ़ में ईशान-कोण से हवा चले, तब फसल अच्छी होगी। लोकोक्ति के रूप में इसे इस प्रकार कहते हैं -

बयार चले ईसाना।
ऊँची खेती करो किसाना ॥ (सिंह, 66)

घाघ का मानना है कि अच्छी पैदावार के लिए खेत को गहरा जोतने की आवश्यकता है । अत: वे खेत की गहरी जुताई की सलाह देते हुए कहते हैं -

कहा होय बहु बाहें।
जोता न जाय थाहें॥ (किरण त्रिपाठी, 26)

अर्थात् यदि खेत को गहरा न जोता जाय तो बार-बार जोतने से कोई लाभ नहीं होगा। इसी क्रम में आगे कहते हैं -

जेतना गहिरा जोतै खेत।
बीज परे फल अच्छा देत॥ (किरण त्रिपाठी, 30)

खेत को जितना गहरा जोते, बीज पड़ने पर उतना ही अच्छा फल देता है । परंतु धान की खेती हेतु वे खेत को गहरा जोतने से मना करते हैं -

गाहिर न जोतै बोवै धान ।
सो घर कोठिला भरै किसान ॥ (किरण त्रिपाठी, 30)

अर्थात् धान के खेत को गहरा न जोतकर धान बोवे, इतना धान पैदा हो कि किसान का घर कोठिलों से भर जाएगा। वे कार्तिक महीने में रात में भी हल जोतने की सलाह देते हैं। वे गेहूँ के खेत को दस बार और ईख के खेत को बीस बार जोतने की सलाह देते हैं। वे खेत की गहरी जुताई करके बीज डालना बेहतर मानते हैं। बारीकी से कहते हैं कि आषाढ़ में दो बार नहीं जोतने से खेत में गेहूँ-जौ की बाली छोटी होती है। इसी क्रम में अच्छी फसल हेतु खेत की जुताई के संबंध में घाघ का कहना है कि गेहूँ की कई बार खेत की जुताई करने से, धान को बिदाहने अर्थात् पानी भरे खेत में हल चलाने से और ईख को गोड़ने से इसकी पैदावार बढ़ जाती है।

गेहूँ बाहय धान बिदाहा।
ऊँख गोड़ाई से है आहा॥ (सिंह, 93)

खेती हेतु जमीन के बारे घाघ कहते हैं कि राड़ घास काटकर खेत बनाने से गेहूँ, कुस काटकर खेत बनाने से धान, और गड़रा काटकर खेत बनाने से जड़हन की पैदावार अच्छी होती है। वे आगे कहते हैं कि जिस खेत में फुलही घास हो, उसमें कुछ पैदा नहीं होता अर्थात् किसान को रोना पड़ता है -

रड़है गेहूँ कुसहै धान। गड़रा की जड़ जड़हन जान।
फूली घास दो देयँ किसान। बहिमें होय आन का तान॥ (किरण त्रिपाठी, 29)

चने की खेती के लिए खेत में ढेले को उपयुक्त मानते हैं। वे कहते हैं कि -

जब सैल खटाखट बाजै।
तब चना खूब ही गाजै।। (रामनरेश त्रिपाठी, 64)

अर्थात् खेत में इतने ढेले हों कि हल चलते वक्त बैलों के जुए की सैलें खटखट बजती रहें तभी उस खेत में चने की फसल अच्छी होगी। घाघ आगे कहते हैं कि चने की फसल जब सिंचाई के लायक हो जाये तो उसे तुरंत खुटाना चाहिए। इससे इसकी पैदावार बढ़ जाती है (सिंह, 93)। इसी क्रम में गेहूँ की खेती के लिए वे मैदे की तरह बारीक मिट्टी को उपयुक्त बताते हैं। एक लोकोक्ति के माध्यम से कहते हैं - मैदे गेहूँ ढेले चना (किरण त्रिपाठी, 29)। गेहूँ की खेती के लिए आगे सुझाव देते हैं कि गेहूँ का खेत माघ में जोतना चाहिए; फिर जेठ में; जिससे घास जल जाय। फिर भादो में जोतकर सड़ावे। जो किसान ऐसा करेगा, उसी की स्त्री अन्न भरने के लिए डेहरी (कोठला) बनायेगी । इसके संबंध में उनकी लोकोक्ति है-

माघ मँघारै जेठ में जारै।
भादौ सारै-तेकर मेहरी डेहरी पारै॥ (किरण त्रिपाठी, 30)

मक्का की खेती के संबंध में उनकी लोकोक्ति है -

जोंधरी जोतै तोड़ मड़ोर।
तब वह डारै कोठिला फोर॥ (किरण त्रिपाठी, 31)

अर्थात् मक्के के खेत को खूब उलट-पलट कर जोतना चाहिए। वह इतनी पैदा होगी कि कोठिले (अनाज की कोठरी) में न समायेगी । ईख की खेती के लिए उन्होंने इस प्रकार की सलाह दी है -

तीन कियारी तेरह गोड़ ।
तब देखौ ऊखी के पोर ॥ (किरण त्रिपाठी, 31)

अर्थात् तीन बार सींचो और तेरह बार गोड़ो, तब ऊख अच्छी होगी । अलसी और चना बोने के संबंध में उन्होंने यूँ कहा है -

सरसे अलसी - निरसे चना। (किरण त्रिपाठी, 31)

अर्थात् खेत में तरी हो तो अलसी और खुश्की हो तो चना बोना चाहिये । कपास की खेती के लिए घाघ गोड़ाई का सुझाव देते हैं। वे कहते हैं -

जो कपास को नाहीं गोड़ी।
ताके हाथ न आवै कौड़ी॥ (सिंह, 94)

कपास की खेती के संदर्भ में ही वे कहते हैं -

दो पत्ती क्यों न निराये।
अब बीनत क्यों पछिताये॥ (सिंह, 94)

अर्थात् कपास में दो पत्तियाँ निकली थीं तभी उसकी निराई क्यों नहीं की? अब कपास चुनते हुए क्यों पछताते हो अर्थात् कपास के पौधे में जब दो पत्तियाँ निकले तभी उसकी निराई करवा देनी चाहिए। इससे फसल अच्छी होती है। घाघ गेहूँ और जौ की खेती के विषय में अपना अनुभव यूँ बताते हैं -

अगहन बवा। कहूँ मन सवा॥ (किरण त्रिपाठी, 32)

अर्थात् अगहन में यदि जौ-गेहूँ बोया जायेगा, तो बीघा पीछे कहीं मन भर होगा, कहीं सवा मन अर्थात् उपज कम होगी । वे धान और मक्का के बोने के संबंध में कहते हैं -

पुख पुनर्वस बोवै धान।
असलेखा जोन्हरी परमान॥ (किरण त्रिपाठी, 33)

अर्थात् पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र में धान बोना चाहिये और अश्लेषा में मक्का (जोन्हरी)। गेहूँ, जौ और चना के बोने के संबंध में आगे कहते हैं -

नरसी गेहूँ सरसी जवा।
अति के बरसे चना बवा॥ (किरण त्रिपाठी, 34)

अर्थात् गेहूँ को जरा खुश्क खेत में और जौ को तर खेत में बोना चाहिए और यदि बहुत पानी बरसे, तो चना बोना चाहिए। बाजरा, चना एवं धान के बोने के संबंध में हिदायत देते हुए कहते हैं -

हस्त न बजरी चित्र न चना।
स्वाती न गोहूँ बिसाख न घना॥ (किरण त्रिपाठी, 33)

हस्त में बाजरी, चित्रा में चना, स्वाती में गेहूँ और बिशाखा में धान न बोना चाहिए। रबी फसल की बुआई के बारे में घाघ का कहना है -

जब बर्र बरौठे आई।
तब रबी की होय बोआई॥ (किरण त्रिपाठी, 33)

अर्थात् जब बर्र घर में उड़ती हुई आवे, तब रबी की बुआई होनी चाहिए । सनाई को घनी रूप में बोने का सुझाव देते हैं -

घनी घनी जब सनई बोवै। तब सुतरी की आसा होवै॥ (किरण त्रिपाठी, 34)
अर्थात् सनई को घनी बोने से सुतली की आशा होगी।

सही समय पर एक निश्चित मात्रा में खाद और बीज डालना उत्तम खेती के लिए आवश्यक है। इस संदर्भ में चाँद छाप यूरिया खाद का विज्ञापन इस प्रकार दिया जाता था -

चाँद चाचा अनुभवी किसान इनकी बात का रखना ध्यान।
जो सही समय पर उचित मात्रा में डाले खाद-बीज वही सफल किसान॥

अत: अच्छी खेती के लिए सही समय पर उचित मात्रा में खाद-बीज डालना आवश्यक है। खेत में बीज डालने की मात्रा का घाघ ने विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। उन्होंने इसे लोकोक्ति के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है -

जौ गेहूँ बोवै पाँच पसेर। मटर के बीघा तंसै सेर॥
बोवै चना पसेरी तीन। तिन सेर बीघा जोन्हरी कीन॥
दो सेर मोथी अरहर मास। डेढ़ सेर बिगहा बीज कपास॥
पाँच पसेरी बिगहा धान। तीन पसेरी जड़हन मान॥
सवा सेर बीघा साँवाँ मान। तिल्ली सरसों अँजुरी जान॥
बरैं कोदो सेर बोआओ। डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ॥
डेढ़ सेर बजरा बजरी साँवाँ। कोदो काकुन सवैया बोवा॥
यहि विधि से जब बोवै किसान। दूना लाभ की खेती जान॥
(किरण त्रिपाठी, 36)

अर्थात् फी बीघा पचीस सेर जौ-गेहूँ, मटर तीस सेर, चना पंद्रह सेर, मक्का तीन सेर, अरहर, मोथी और उर्द दो-दो सेर, कपास डेढ़ सेर, धान पचीस सेर, जड़हन पंद्रह सेर, साँवाँ सवा सेर, तिल्ली और सरसों अंजलि भर, बरैं और कोदौ एक सेर, अलसी डेढ़ सेर, बजरा बजरी और साँवाँ डेढ़-डेढ़ सेर और कोदौ, काकुन आधा सेर, इस हिसाब से जो किसान खेत बोवेगा, वह दूना लाभ उठायेगा।

खाद संबंधी लोकोक्तियाँ

घाघ के समय में संभवत: रासायनिक खाद की उपलब्धता नहीं रही होगी परंतु उन्होंने अच्छी पैदावार हेतु खाद की उपयोगिता को स्वीकार किया है। वर्तमान सरकार खाद के रूप में गोबर, नीम कोटेड यूरिया आदि के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयासरत है। इसके महत्व को घाघ सदियों पहले समझते थे। इस संदर्भ में उनकी लोकोक्ति इस प्रकार है -

गोबर, मैला, नीम की खली।
यासे खेती दूनी फली॥(किरण त्रिपाठी, 32)

अर्थात् गोबर, पखाना और नीम की खली डालने से खेती में दूना पैदावार होता है। उन्होंने खाद के महत्व को इस प्रकार भी रेखांकित किया है -

खाद पड़ै तो खेत।
नहीं तो कूड़ा रेत ॥ (किरण त्रिपाठी, 32)

अर्थात् खाद पड़ने से ही खेती हो सकती है नहीं तो कूड़ा-करकट और रेत के सिवा कुछ नहीं होगा। मवेशियों का महत्व सदा से रहा है। उनसे हमें दुग्ध एवं इससे संबंधित उत्पाद के साथ-साथ गोबर, हड्डी, चमड़ा इत्यादि भी प्राप्त होता है जो हमारे लिए बहुत उपयोगी है। आधुनिक काल में गोबर से बिजली उत्पादन भी किया जाता है। चर्म उद्योग से लाभ प्रशंसनीय है। हड्डी से दवाई, खाद आदि का निर्माण सदियों से होता रहा है। घाघ ने गोबर को उत्तम खाद के रूप में बताते हुए कहा है -

जेकरै खेत पड़ा नहीं गोबर ।
वही किसान को जान्यौ दूबर ॥ (किरण त्रिपाठी, 32)

अर्थात् जिस किसान के खेत में गोबर नहीं पड़ा, उसे कमजोर समझना चाहिये । वे आगे कहते हैं -

गोबर मैला पानी सड़ै।
तब खेती में दाना पड़ै॥ (किरण त्रिपाठी, 32)

अर्थात् खेत में गोबर, पखाना और पत्ती सड़ने से दाना अधिक होता है। वे आगे कहते हैं -

गोबर, चोकर, चकवर, रूसा।
इनको छोड़े होय न भूसा।। (किरण त्रिपाठी, 32)

अर्थात् गोबर, चोअर, चकवन और अड़ूसे की पत्तियाँ खेत में छोड़ने से भूसा नहीं होता है अर्थात् अन्न ज्यादा उपजता है। खाद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आगे कहा है-

खेती करै खाद से भरै।
सौ मन कोठिला में लै धरै॥ (सिंह, 91)

प्रासांगिकता

घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियाँ कन्नौज एवं आस - पास के क्षेत्रों की लोकभाषा में है । इस पर नजदीकी क्षेत्र के बोलियों का प्रभाव भी पड़ा है। अत: यह राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं बिहार के साथ - साथ अन्य प्रदेशों में भी समझा जा सकता है। भारत में दैनिक जीवन में पंचांग का बहुत महत्व है। मनुष्य के जन्म से पहले से लेकर, आजीवन एवं मृत्योपरांत भी मनुष्य के सभी संस्कार पंचांग को ध्यान में रखकर संपन्न किए जाते हैं। सभी मांगलिक कार्य पंचांग आधारित ज्ञान को ध्यान में रखकर किए जाते हैं। अत: इसका ज्ञान प्राय: सर्व सुलभ है। अत: घाघ एवं भड्डरी के लोकोक्तियों का अनुपालन सहज है। घाघ और भड्डरी ने अपने लोकोक्तियों में हिंदी माह का जिक्र किया है जो आज भी सामान्य रूप से गाँवों में समझा जाता है एवं प्राय: मुंडन, विवाह जैसे सभी अनुष्ठान इसी को ध्यान में रखकर संपन्न किए जाते हैं। अत: घाघ और भड्डरी के लोकोक्तियों का अनुपालन व्यावहारिक रूप से सहज है। कृषि के महत्व और कृषक के साक्षरता एवं अब

डिजिटल साक्षरता के आलोक में पारंपरिक भारतीय ज्ञान को कृषि हित में आगे बढ़ाना उपयोगी होगा।

निष्कर्ष

घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियों में भारतीय भाषा एवं संस्कृति की झलक मिलती है। इन लोकोक्तियों के माध्यम से हमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही भारतीय ज्ञान पद्धति की जानकारी मिलती है। लोकोक्तियों के माध्यम से 16वीं- 17वीं शताब्दी से भारत में चली आ रही कृषि की पारंपरिक पद्धति का ज्ञान प्राप्त होता है। उनकी लोकोक्तियों में वर्षा, अकाल, मौसम संबंधी ज्ञान, जुताई, बोवाई, सिंचाई, खाद-बीज की मात्रा, निराई- गुड़ाई, फसल रोग, खेत-रक्षा, कटाई, मड़ाई, पैदावार एवं पशु के बारे में चर्चा की गई है जो कृषि कार्य में सहायक है।

लोकोक्तियों की भाषा जनभाषा होने के कारण अनुपालन करने हेतु साक्षरता कोई आवश्यक शर्त नहीं है। यह परिवार एवं समाज में सुनकर और देखकर सीखा जा सकता है। उन्हें समझना आसान है। ज्यादातर लोकोक्तियाँ कम शब्दों में एवं तुकबंदी में है। अत: उन्हें याद रखना आसान है। सरल शब्दों में उपलब्ध ज्ञान का उपयोग करना आसान है। हम देखते हैं कि घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियाँ भारत में सदियों से प्रचलित पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है। विज्ञान के विकास के साथ-साथ पंचांग आधारित ज्ञान की पुष्टि भी हुई है। फलस्वरूप भारत सरकार ने विश्वविद्यालयों में ज्योतिषशास्त्र की शिक्षा पर बल दिया है। इसकी महत्ता को देखते हुए ज्योतिष चिकित्सा केंद्र भी खोले गए हैं। घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियाँ उनके पंचांग ज्ञान एवं उन पर आधारित कृषि संबंधी ज्ञान की पुष्टि करती है। अधिकांश कृषक के निरक्षर या कम शिक्षित होने की स्थिति में जनभाषा में उपलब्ध उनके अनुभव आधारित ज्ञान का महत्व बहुत बढ़ जाता है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का आवश्यक अंग है। अत: इसे और भी लोकप्रिय बनाने एवं जनता के बीच प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है।

[1] *Mysre Journal of Agricultural Science, 56(3): 16-28 (2022)*

[2] *Brainly.in accessed on 11.02.2026*

संदर्भ ग्रंथ:

1. त्रिपाठी, किरण, 2013, घाघ और भड्डरी (पूर्वोत्तर के लोक-कवि घाघ और भड्डरी की लोकजीवन और कृषि-विज्ञान पर लोकोक्तियों का संकलन), शुभम् प्रकाशन, द्वितीय संस्करण
2. सिंह, रमेश प्रताप (सं.), 2013, घाघ और भड्डरी की कहावतें, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, तृतीय संस्करण
3. त्रिपाठी, रामनरेश (सं), 1931, घाघ और भड्डरी, हिंदुस्तानी ऐकेडेमी, प्रथम संस्करण